महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा

की

पी-एच. डी. (हिंदी) की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध सार (Synopsis)

शोध-विषय

"हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में हंस और राजेन्द्र यादव : एक अनुशीलन"

शोधकर्ता

राकेश कुमार यादव
हिंदी विभाग, कला संकाय,
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा

शोध- निर्देशक

डॉ. मायाप्रकाश पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग, कला संकाय,
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा

नामांकन संख्या - FOA/1437, दिनांक - 15-04-2017

जून 2022

अनुक्रमाणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	प्राक्कथन	3-5
2.	शोध विषय के अध्याय	6-8
3.	शोध-प्रबंध का संक्षिप्त विवरण	9-12
4.	उपसंहार	13
5.	परिशिष्ट सन्दर्भ ग्रन्थ सूची, पत्र-पत्रिकाएँ , कोश-ग्रन्थ	14-16

प्राक्कथन

प्रारम्भ से ही मेरी रुचि हिन्दी भाषा, साहित्य एवं हिंदी पत्रकारिता के प्रति रही है। मैं हमेशा हिंदी भाषा का सम्मान किया हूँ और करता रहूंगा। इतना ही नहीं मैंने अपने मेहनत से आज तक हिंदी भाषा व साहित्य के प्रति अपनी रूचि को बरकरार रखा हूँ। साहित्य से मानव संस्कारों का विकास होता है। साहित्य की विधाओं में बच्चों से लेकर बुजुर्गों के मन को चुम्बकीय गुणों से बांध रखने की शक्ति है। मैं भी साहित्य के इस शक्ति से अछूता नहीं रहा।

वर्तमान जीवन की आवश्यकताओं, अनिवार्यताओं, उपलब्धियों, परिघटनाओं एवं विसंगतियों को सही ढंग से प्रकट करने का कार्य आज जिस माध्यम के द्वारा अधिकार पूर्वक सम्पन्न हो रहा हैं वह माध्यम है पत्रकारिता।

यह चुनौती भरा कार्य पत्रकारिता ही कर सकती है। यदि हम ऐसा कहे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। वास्तव में यह ऐसा सूत्र है जो मानव और समाज को विश्व से जोड़ता है। इसे लोकतंत्र के 'चौथे स्तंभ' की संज्ञा दी जाती है। पत्रकारिता लोकतंत्र का प्रहरी है। अतः पत्रकारिता एक गंभीर एवं उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है। इसका लक्ष्य एक आदर्श समाज की स्थापना करना हैं।

पत्रकारिता अभिव्यक्ति की मनोरम कला भी है, इसका कार्य जनता तथा जन-नेताओं के समक्ष लोक कल्याण संबंधी कार्यों की सूची प्रस्तुत करना है। समाचार पत्र दैनिक जीवन का अनिवार्य अंग है। यह प्रबुद्ध पाठकों के लिए एक ऐसा दर्पण है जिसकी सहायता से वे विश्व की गतिविधि, स्वराष्ट्र के उत्थान-पतन तथा क्षेत्र विशेष की ज्वलंत समस्याओं से सुपरिचित होते हैं। समाज का वास्तविक प्रतिबिंब समाचार पत्रों में पाया जाता है। समाचार पत्रों में सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् की आराधना होती है। हिंदी पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप किसी भी तरह से अपनी पूर्व पत्रकारिता से कमतर या कमजोर दिखाई नहीं

पड़ता। स्वतंत्रता से पूर्व हिंदी पत्रकारिता विषय केंद्रित थी। स्वतंत्रता प्राप्त करने की दिशा में एक साधन के रूप में कार्य किया, परंतु आज चुनौती दूसरी है। समृद्ध राष्ट्र की कल्पना और उसको मूर्त रूप प्रदान करना है।

आधुनिक युग की बौद्धिकता एवं विवेकयुक्त दृष्टि ने इसे मात्र मनोरंजन, भोजनोंपरांत नींद लेना अथवा यात्रा आदि में टाइमपास मनोरंजन की हल्की-फुल्की 'चीज' जैसी स्थिति से उठाकर चिंतन और प्रेरणा की विधा के रूप में प्रतिष्ठित कर उसके विकास और समृद्धि के नवीन द्वार उन्मुक्त किए हैं। अपने स्तर से कई पत्र-पत्रिकाओं ने इसमें अपना योगदान दे रहे हैं। इनमें 'हंस' पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 'हंस' पत्रिका ने अपने विशेषांकों के माध्यम से समाज को खासकर दलित, पिछड़ा, अल्पसंख्यक और महिला को एक नई दिशा दी है। और हिंदी साहित्य में स्त्री, दलित, पिछड़ा और अल्पसंख्यक को स्थापित किया हैं। प्रेमचंद के 'हंस' ने साहित्य को प्रतिष्ठा दी और उसी परंपरा को राजेंद्र यादव ने कायम रखा है।

15-04-2017 को विश्वविद्यालयी शोध समिति की बैठक में मेरा शोध शीर्षक 'हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में हंस और राजेंद्र यादव : एक अनुशीलन' स्वीकार कर लिया गया। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। इस सबका सम्पूर्ण श्रेय मेरे गुरुवर श्रद्धेय डॉ मायाप्रकाश पाण्डेय व प्रो शिवप्रसाद शुक्ल सर को जाता है। मैं उनका हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध-प्रबंध को निम्नलिखित विवरण के अनुसार वर्गीकृत करके कार्य पूरा किया है। जिससे विषय का प्रतिपादन भली प्रकार सम्भव और सम्यकरूपेण हो सके।

शोध विषय के अध्याय :

"हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में हंस और राजेंद्र यादव : एक अनुशीलन"

प्रथम अध्याय - हिंदी पत्रकारिता का उद्भव और विकास

- पत्रकारिता का अर्थ और परिभाषा
- पत्रकारिता का जन्म और विकास
- हिंदी पत्रकारिता : उद्भव और विकास
- हिंदी पत्रकारिता का उद्भव काल
- हिंदी पत्रकारिता का भारतेंदु (विकास) काल
- हिंदी पत्रकारिता का द्विवेदी (उत्थान) काल
- हिंदी पत्रकारिता का गाँधी काल
- स्वातंत्र्योत्तर काल की हिंदी पत्रकारिता
- हिंदी पत्रकारिता का उद्देश्य और दायित्व
- हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप और महत्व
- हिंदी पत्रकारिता का क्षेत्र
- हिंदी पत्रकारिता का वर्तमान परिदृश्य
- हिंदी पत्रकारिता का भविष्य

द्वितीय अध्याय - पत्रकारिता : हंस और साहित्य

- हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता
- हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता का स्वरूप और हिंदी पत्रों का आरंभ

- प्रेमचंद का प्रत्रकार रूप
- हंस
- हंस की विशेषताएं
- हंस और प्रेमचंद
- हंस और शिवरानी देवी
- हंस और बाबूराव विष्णु पराड़कर
- हंस और जैनेन्द्र कुमार
- हंस और श्रीपतराय
- हंस और शिवदान सिंह चौहान
- हंस और अमृतराय

तृतीय अध्याय - राजेंद्र यादव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

- राजेंद्र यादव
- परिवार का संस्कार
- आगरा से कोलकाता
- आदतें और शौक
- मार्गदर्शक और मददगार
- निःस्वार्थी
- स्वाभिमानी एवं संवेदनशील

- लेखन के प्रति दृष्टिकोण

चतुर्थ अध्याय - राजेन्द्र यादव का योगदान

- पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान
- हंस के विकास में योगदान

पंचम अध्याय - हंस और उसके विशेषांक

- विमर्श
- हंस का स्त्री विमर्श
- स्त्री विमर्श की पृष्ठभूमि
- स्त्री विमर्श का स्वरुप
- औरत : उत्तरकथा 1994
- अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य 2000
- स्त्री भूमंडलीकरण : पितृ सत्ता के नये रूप 2001
- स्त्री विमर्श : अगला दौर 2009
- हंस और दलित के बदलते आयाम
- दलित साहित्य की पृष्ठभूमि और स्वरूप
- सत्ता विमर्श और दलित 2004
- दलित साहित्य विशेषांक नवंबर 2019
- दलित साहित्य विशेषांक दिसंबर 2019
- हंस और मुसलमान के बदलते आयाम
- भारतीय मुसलमान : वर्तमान और भविष्य 2003

- कथा जगत की बागी मुस्लिम औरतें

उपसंहार

परिशिष्ट - 1. ग्रंथानुक्रमणिका

- सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची
- आधार ग्रन्थ सूची
- शब्दकोश
- पत्र-पत्रिकाएं

शोध-प्रबंध का विवरण :

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में निष्कर्ष तथा सन्दर्भ सूची दी गई है। सभी अध्यायों के अंत में निष्कर्ष के रूप में उपसंहार दिया गया है। उसके बाद ग्रंथानुक्रमणिका के अंतर्गत आधार-ग्रंथ, संदर्भ-ग्रंथ, कोश-ग्रंथ तथा पत्र-पत्रिकाओं की सूची को आकारांतक्रम में दी है।

प्रथम अध्याय - हिंदी पत्रकारिता का उद्भव और विकास

शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय के अंतर्गत 'हिंदी पत्रकारिता के उद्भव एवं विकास' पर हमने प्रकाश डाला है। हिंदी पत्रकारिता का अर्थ और परिभाषा, हिंदी पत्रकारिता का जन्म और विकास, हिंदी पत्रकारिता का उद्देश्य और दायित्व, हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप और महत्व, हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र, हिंदी पत्रकारिता का अतीत और वर्तमान, पत्रकारिता का भविष्य के बारे में विस्तृत विवेचना की गई हैं। हिंदी पत्रकारिता के सभी पहलुओं पर चर्चा किया गया है। और अंत में 'हंस' पत्रिका के बारे में भी जानकारी दी गई है। अध्याय के अंत मे निष्कर्ष भी दिया गया है साथ ही साथ सन्दर्भ ग्रंथ भी दिया गया है।

द्वितीय अध्याय - हिंदी पत्रकारिता : हंस और साहित्य

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत 'हिंदी पत्रकारिता : हंस और साहित्य' के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है। इसमें 'हंस' के उद्भव जिसमें प्रेमचंद जी के बारे में बताया गया है कि किन परिस्थितियों में प्रेमचंद ने हंस को शुरू किया। उन्हें कितना संघर्ष करना पड़ा। प्रथम टॉपिक 'हंस और प्रेमचंद' में 'हंस' के जन्म से लेकर जब तक प्रेमचंद इसके संपादक रहे तब तक के बारे में विस्तार से चर्चा

किया गया है। उसके बाद द्वितीय टॉपिक 'हंस और शिवरानी देवी, में जब प्रेमचंद की मृत्यु हो जाती है तो हंस को आगे ले जाने की जिम्मेदारी शिवरानी देवी के कंधों पर आ जाती है। और शिवरानी देवी अपने मेहनत और कुशल नेतृत्व में हंस को आगे बढ़ाती हैं। उसके बाद 'हंस और जैनेन्द्र कुमार' टॉपिक के अंतर्गत जैनेन्द्र जी ने हंस के संपादक की जिम्मेदारी ले ते है और हंस को आगे बढ़ाते हैं। जैनेन्द्र जी के बाद हंस की जिम्मेदारी के. एम. मुंशी, शिवदान सिंह के कंधों पर आ जाती है। वे लोग भी आपने तरीके से हंस को आगे बढ़ाते हैं। इन लोगों के बाद हंस की जिम्मेदारी प्रवासीलाल वर्मा व अमृतराय के पास आती है ये लोग मिलकर हंस के कुछ अंक निकालते हैं। और 1956 में हंस बंद हो जाती है। हंस को क्यो बंद करना पड़ा क्या मजबूरियां थी। प्रत्येक विषय पर इस अध्याय में विन्दुसः चर्चा किया गया है। अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

तृतीय अध्याय - राजेन्द्र यादव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

शोध-प्रबंध के तृतीय अध्याय में राजेंद्र यादव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर हमने प्रकाश डाला है। व्यक्तित्व के अंतर्गत हमने राजेंद्र जी के जन्म, बचपन, माता-पिता, शिक्षा, पारिवारिक परिचय, संस्कारगत प्रभाव, अभिरुचियाँ, वैवाहिक जीवन, पिता के रूप में, भौतिक सुख-सुविधाओं के प्रति निर्मोही स्वभाव, वसूलों के पक्के, निःस्वार्थी व्यक्तित्व, प्रचार-प्रियता से दूर रहना, जनवादी लेखक संघ तथा राजेंद्र यादव आदि पहलुओं पर गहराई से अध्ययन किया गया है। साथ ही साथ राजेंद्र जी के व्यक्तित्व के विभिन्न रूपों की भी चर्चा की गई है जैसे कि बाह्य व्यक्तित्व, आंतरिक व्यक्तित्व तथा लेखकीय व्यक्तित्व आदि का आकलन किया गया है। इसके बाद राजेंद्र जी के निधन की चर्चा की गई है। इसी अध्याय में राजेंद्र जी के कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष पर चर्चा किया गया है।

चतुर्थ अध्याय - राजेंद्र यादव का योगदान

शोध-प्रबंध के चतुर्थ अध्याय में राजेंद्र यादव का योगदान विषय पर प्रकाश डाला गया है। इसमें राजेन्द्र यादव का पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान। जिसमें राजेंद्र यादव ने पत्रकारिता के क्षेत्र कितना योगदान किया किन-किन पत्र-पत्रिकाओं के लिए काम किये और अंत में कैसे हंस के संपादन की शुरुआत किया। उसके बाद 'हंस' के विकास में योगदान। राजेंद्र यादव ने 'हंस' को ही क्यों चुना, 'हंस' शुरू करने में किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इन कठिनाइयों से संघर्ष करते हुए राजेंद्र यादव ने 'हंस' को कैसे हिंदी साहित्य की नम्बर एक पत्रिका के रूप में स्थापित किया। और अंत में निष्कर्ष पर चर्चा किया गया है।

पंचम अध्याय - हंस और उसके विशेषांक

शोध-प्रबंध के पंचम अध्याय में 'हंस और उसके विशेषांकों' पर गहराई से प्रकाश डाला गया है। नारी विमर्श के अंतर्गत हंस और स्त्री के बदलते आयाम में 'औरत : उत्तरकथा - 1994' से लेकर 'स्त्री विमर्श : अगला दौर - नवंबर - 2009' तक विस्तृत विवरण व्याख्या के साथ दिया गया है। साथ ही साथ वर्तमान में स्त्री की दशा और दिशा के बारे में भी बताया गया है। उसके बाद 'दलित विमर्श' जिसमें 'हंस और दलित के बदलते आयाम' में 'सत्ता विमर्श और दलित - अगस्त 2004' से लेकर 'दलित (प्रतिरोध/अधिकार/समता खण्ड - 1/2) नवंबर/दिसम्बर - 2019' तक का विस्तृत विवरण दिया गया है। उसके बाद 'हंस और मुसलमान' तथा 'हंस और आदिवासी' विमर्श के बारे में चर्चा किया गया है।

उपसंहार

मैं अपने शोध-प्रबंध के सभी अध्यायों के अंत में निष्कर्ष लिखा है। किन्तु यहाँ उपसंहार में मैंने अपने सम्पूर्ण शोध का निष्कर्ष निकालकर 'हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में हंस और राजेंद्र यादव : एक अनुशीलन' के वर्तमान स्थिति का विश्लेषण किया है। साथ ही इसे समृद्ध बनाने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है, इन बिन्दुओं पर भी चर्चा की है।

परिशिष्ट -

अंत में अनुक्रमणिका के अंतर्गत हमने सहायक ग्रंथ, कोश ग्रंथ और पत्र-पत्रिकाओं का विवरण दिया है। जिनका उपयोग मैंने अपने शोध-प्रबंध में सहायक के रूप में किया है।

अपने इस महत्वाकांक्षी शोध-प्रबंध को मैं कभी पूर्णता तक न पहुँचा पाता यदि गुरुजनों और परिजनों के आशीर्वाद और स्नेह का संबल कदम-कदम पर मेरे साथ न होता। श्रद्धेय डॉ मायाप्रकाश पाण्डेय सर और प्रो शिवप्रसाद शुक्ल सर का मार्गदर्शन, सुझाव व उत्साहवर्धन किया। इनके आशीषों की छाया निरंतर मेरे साथ रही। जिसके कारण मैंने यह असंभव सा कार्य संभव व पूर्ण कर पाया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिंदी पत्रकारिता संवाद और विमर्श – कैलाश नाथ पाण्डेय, प्रथम संस्करण – 2017, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज – 211001
2. प्रेमचंद : घर में – शिवरानी देवी, प्रथम संस्करण – दिसम्बर 1944, प्रकाशक – सरस्वती प्रेस बनारस
3. लमही पत्रिका : अप्रैल-सितम्बर (संयुक्तांक) 2018, संपादक- ऋत्विक राय, विवेक खंड, गोमती नगर लखनऊ- 226010
4. लमही पत्रिका : जुलाई-सितम्बर (संयुक्तांक) 2021, संपादक- ऋत्विक राय, विवेक खंड, गोमती नगर लखनऊ- 226010
5. औरों के बहाने (संस्मरण और संश्लेषण) – राजेन्द्र यादव, दूसरा संस्करण- 2014, प्रकाशक – राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
6. जवाब दो विक्रमादित्य (साक्षात्कार) – राजेन्द्र यादव, द्वितीय संस्करण – 2009, प्रकाशक – वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली – 110002
7. मेरे साक्षात्कार – राजेन्द्र यादव, प्रथम संस्करण – 1994, प्रकाशक – किताबघर, 24 अंसारी रोड, दरियागंज नयी दिल्ली- 110002
8. हंस पत्रिका – दिसम्बर 2013, संपादक – संजय सहाय, अक्षर प्रकाशन प्रा. लि., 2/36, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002
9. हंस विशेषांक – अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य – जनवरी-फरवरी 2000, विशेष संपादक – अर्चना वर्मा, अक्षर प्रकाशन, अन्सारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली – 110002

10. हंस विशेषांक – स्त्री-भूमंडलीकरण : पितृ-सत्ता के नये रूप- मार्च 2001, विशेष संपादक – प्रभा खेतान, अक्षर प्रकाशन, अन्सारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली-110002
11. हंस विशेषांक – स्त्री-विमर्श : अगला दौर- नवंबर 2009, विशेष संपादक – प्रभा खेतान, अक्षर प्रकाशन, अन्सारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली – 110002
12. हंस विशेषांक – सत्ता-विमर्श और दलित – अगस्त 2004, विशेष संपादक – अर्चना वर्मा, अक्षर प्रकाशन, अन्सारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली – 110002
13. हंस विशेषांक-दलित (प्रतिरोध।अधिकार।समता) नवंबर 2019, विशेष संपादक - अजय नावरिया, अक्षर प्रकाशन, अन्सारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली –110002
14. हंस विशेषांक-दलित (प्रतिरोध।अधिकार।समता) दिसंबर 2019,विशेष संपादक – अजय नावरिया, अक्षर प्रकाशन, अन्सारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली –110002
15. हंस विशेषांक - भारतीय मुसलमान : वर्तमान और भविष्य,अगस्त 2003, विशेष संपादक - असगर वजाहत, अक्षर प्रकाशन, अन्सारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली-110002

शब्दकोश :

1. राजपाल हिंदी शब्दकोश – डॉ. हरदेव बाहरी
2. प्रभात आधुनिक हिंदी शब्दकोश – डॉ. श्याम बहादुर वर्मा
3. यूनीकार्न हिंदी शब्दकोश – डॉ. सच्चिदानंद शुक्ल
4. राजपाल पारिभाषिक शब्दकोश - डॉ. हरदेव बाहरी
5. हिंदी साहित्य कोश – डॉ. धीरेन्द्र शर्मा

पत्र-पत्रिकाएं :

1. हंस
2. आजकल
3. लमही
4. सारिका
5. पाखी
6. वागर्थ
7. जनाकृति
8. नया ज्ञानोदय
9. साहित्य वार्षिकी इंडिया टुडे
10. हिन्दुस्तान
11. दैनिक जागरण

इन्टरनेट वेबसाइट्स :

1. www.google.com
2. www.bbchindi.com
3. www.youtube.com
4. www.facebook.com
5. www.hindiwikipedia.com
6. livehindustan.com